



डी आर डी ओ समाचार



ISSN: 0971-4391

डी आर डी ओ की मासिक गृह पत्रिका

www.drdo.gov.in

“बलस्य मूलं विज्ञानम्”

अग्रहायण - पौष 1940, दिसम्बर 2020 खण्ड 32 अंक 12

क्यू आर एस ए एम प्रणाली द्वारा एक और महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल



नवोन्मेष 05

प्रौद्योगिकी अंतरण हेतु लाइसेंस करार 07

घटनाक्रम 09

मानव संसाधन विकास क्रियाकलाप 15

नियुक्तियां 22

निरीक्षण/दौरा 24



इस अंक में

दिसम्बर, 2020
खंड-32, अंक 12
आई एस एस एन : 0971-4391

मुख्य लेख

04

तुरंत जवाबी कार्रवाई करते हुए ज़मीन से हवा में मार करने वाली मिसाइल (क्यूआरएसएएम) प्रणाली के संबंध में एक और महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की गई



नवोन्मेष

05

संवर्धित पिनाका रॉकेट प्रणाली का सफल परीक्षण किया गया

टैंक रोधी गाइडेड मिसाइल (एटीजीएम) नाग का आखिरी प्रयोक्ता परीक्षण सफलतापूर्वक पूरा किया गया

प्रौद्योगिकी अंतरण हेतु लाइसेंस करार

07



मानव संसाधन विकास क्रियाकलाप
निरीक्षण/दौरा कार्यक्रम

प्रकाशन का 32वां वर्ष

मुख्य संपादक : डॉ. अलका सूरी
प्रबंध संपादक : सुमति शर्मा
संपादक : अजय कुमार
संपादकीय सहायक: राकेश कुमार, सुभाष नारायण



वेबसाइट :
<https://www.drdo.gov.in/drdo/pub/newsletter/>
अपने सुझावों से हमें अवगत कराने के लिए कृपया संपर्क करें :
director@desidoc.drdo.in
दूरभाष : 011-23902403, 23902482
फैक्स : 011-23819151

हमारे संवाददाता

अंबरनाथ : डॉ. सुसन टाइटस, नौसेना सामग्री अनुसंधान प्रयोगशाला (एनएमआरएल); **चांदीपुर :** श्री पी एन पांडा, एकीकृत परीक्षण परिसर (आईटीआर); **बेंगलूरु :** श्री सुबुकुट्टी एस. वैमानिकी विकास प्रतिष्ठान (एडीई); श्रीमती एम. आर. भुवनेश्वरी, वायुवाहित प्रणाली केंद्र (केब्स); श्रीमती फहीमा एजीजे, कृत्रिम आसूचना एवं रोबोटिकी केंद्र (सीएआईआर); सुश्री तृप्ति रानी बोस, सैन्य उड़नयोग्यता एवं प्रमाणीकरण केंद्र (सेमीलेक); श्रीमती जोसेफिन निर्मला एम, रक्षा उद्दयानिकी अनुसंधान प्रतिष्ठान (डेर); श्रीमती अनुरा वेंकटेश, रक्षा जैवअभियांत्रिकी एवं विद्युत चिकित्सा प्रयोगशाला (डेबेल); श्री वेंकटेश प्रभु, इलेक्ट्रॉनिक एवं रडार विकास प्रतिष्ठान (एलआरडीई); डॉ. विशाल केसरी, सूक्ष्म तरंग नलिका अनुसंधान एवं विकास केंद्र (एमटीआरडीसी); **चंडीगढ़ :** श्री एच एस गोसाई, हिम तथा अवधाव अध्ययन प्रतिष्ठान (सासे); डॉ. प्रिंस शर्मा, चरम प्राक्षेपिकी अनुसंधान प्रयोगशाला (टीबीआरएल); **चेन्नई :** श्रीमती एस जयसुधा, संग्राम वाहन अनुसंधान एवं विकास प्रतिष्ठान (सीवीआरडीई); **देहरादून :** श्री अभय मिश्रा, रक्षा इलेक्ट्रॉनिक अनुप्रयोग प्रयोगशाला (डील); श्री जे पी सिंह, यंत्र अनुसंधान एवं विकास प्रतिष्ठान (आईआरडीई); **दिल्ली :** श्री आशुतोष भटनागर, कार्मिक प्रतिभा प्रबंधन केंद्र (सेप्टेम); डॉ. दीप्ति प्रसाद, रक्षा शरीरक्रिया एवं संबद्ध विज्ञान संस्थान (डिपास); डॉ. निधि महेश्वरी, रक्षा मनोवैज्ञानिक अनुसंधान संस्थान (डीआईपीआर); श्री नवीन सोनी, नाभिकीय औषधि एवं संबद्ध विज्ञान संस्थान (इनमास); श्री अनुराग पाठक, पद्धति अध्ययन एवं विश्लेषण संस्थान (ईसा); डॉ. इंदु गुप्ता, लेज़र विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी केंद्र (लेसटेक); सुश्री नूपुर श्रोत्रिय, वैज्ञानिक विश्लेषण समूह (एसएजी); डॉ. रूपेश कुमार चौबे, ठोसावस्था भौतिकी प्रयोगशाला (एसएसपीएल); **ग्वालियर :** श्री आर के श्रीवास्तव, रक्षा अनुसंधान एवं विकास प्रतिष्ठान (डीआरडीई); **हल्दवानी :** डॉ. अतुल ग्रोवर, रक्षा जैवऊर्जा अनुसंधान संस्थान (डिबेर); **हैदराबाद :** श्री हेमंत कुमार, उन्नत प्रणाली प्रयोगशाला (एएसएल); श्री प्रमोद के झा, उन्नत प्रणाली केंद्र (सीएसएल); डॉ. जे के राय, उन्नत अंकीय अनुसंधान एवं विश्लेषण समूह (अनुराग); सुश्री विदिशा लहिरी, उच्च ऊर्जा प्रणाली एवं विज्ञान केंद्र (सीएचईएसएस); श्री ए आर सी मूर्ति, रक्षा इलेक्ट्रॉनिक अनुसंधान प्रयोगशाला (डीएलआरएल); डॉ. मनोज कुमार जैन, रक्षा धातुकर्मीय अनुसंधान प्रयोगशाला (डीएमआरएल); डॉ. के नागेश्वर राव, रक्षा अनुसंधान एवं विकास प्रयोगशाला (डीआरडीएल); श्री ललित शंकर, अनुसंधान केंद्र इमारत (आरसीआई); **जगदलपुर :** डॉ. गौरव अग्निहोत्री, एस एफ परिसर (एसएफसी); **जोधपुर :** श्री रवींद्र कुमार, रक्षा प्रयोगशाला (डीएल); **कानपुर :** श्री ए के सिंह, रक्षा सामग्री एवं भंडार अनुसंधान और विकास प्रतिष्ठान (डीएमएसआरडीई); **कोच्चि :** श्रीमती लता एम एम, नौसेना भौतिकी एवं समुद्र विज्ञान प्रयोगशाला (एनपीओएल); **लेह :** डॉ. डॉर्जी आंगचॉक, रक्षा उच्च तुंगता अनुसंधान संस्थान (डिहार); **मसूरी :** डॉ. गोपा बी चौधरी, प्रौद्योगिकी प्रबंध संस्थान (आईटीएम); **मैसूरु :** डॉ. एम पाल्मुरगन, रक्षा खाद्य अनुसंधान प्रयोगशाला (डीएफआरएल); **पुणे :** डॉ. (श्रीमती) जे ए कानितकर, आयुध अनुसंधान और विकास स्थापना (एआरडीई); डॉ. विजय पट्टर, रक्षा उन्नत प्रौद्योगिकी संस्थान (डीआईएटी); श्री ए एम देवाले, उच्च ऊर्जा पदार्थ अनुसंधान प्रयोगशाला (एचईएमआरएल); श्री एस एस अरोल, अनुसंधान और विकास प्रतिष्ठान (इंजीनियर्स) (आरएंडडीई (इंजी); **तेजपुर :** डॉ. जयश्री दास, रक्षा अनुसंधान प्रयोगशाला (डीआरएल)।

मुख्य लेख

तुरंत जवाबी कार्रवाई करते हुए ज़मीन से हवा में मार करने वाली मिसाइल (क्यू आर एस ए एम) प्रणाली के संबंध में एक और महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की गई

तुरंत जवाबी कार्रवाई करते हुए ज़मीन से हवा में मार करने वाली मिसाइल (क्यूआरएसएएम) प्रणाली के संबंध में एक और महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की गई है। इस मिसाइल ने मध्यम रेंज और मध्यम ऊंचाई पर स्थित बंसी पायलट रहित लक्ष्य विमान (ड्रोन) पर सटीक प्रहार द्वारा उसे नष्ट करके यह उपलब्धि हासिल की। मिसाइल का प्रक्षेपण 13 नवंबर 2020 को एकीकृत परीक्षण परिसर (आईटीआर), चांदीपुर से किया गया था। इस मिसाइल को एकल चरण वाले ठोस नोदक रॉकेट मोटर द्वारा नोदित किया गया और इसमें स्वदेश में निर्मित की गई उप-प्रणालियां प्रयोग में लाई गई हैं। इस मिसाइल को कैनिसटर में रखकर प्रक्षेपण स्थल तक ले जाया गया और इसे कैनिसटर में रखी गई छह मिसाइलों को एक साथ प्रक्षेपित करने में सक्षम मोबाइल लांचर का प्रयोग करके प्रक्षेपित किया गया।

इस परीक्षण के दौरान तुरंत जवाबी कार्रवाई करते हुए ज़मीन से हवा में मार करने वाली मिसाइल (क्यूआरएसएएम) आयुध प्रणाली से संबंधित सभी उपकरणों जैसे कि बैटरी मल्टीफंक्शन रडार, बैटरी सर्विलेंस रडार बैटरी कमान पोस्ट व्हीकल और मोबाइल लांचर प्रयोग में लाए गए। यह प्रणाली हवा में गतिशील लक्ष्यों को ज्ञात करने और उन पर सटीक प्रहार करने में सक्षम है और यह मिसाइल काफी कम समय के भीतर लक्ष्य पर सटीक प्रहार करके उसे ध्वस्त



एकीकृत परीक्षण परिसर (आईटीआर), चांदीपुर से तुरंत जवाबी कार्रवाई करते हुए ज़मीन-से-हवा में मार करने वाली मिसाइल (क्यूआरएसएएम) प्रणाली का प्रक्षेपण



कर सकती है। यह प्रणाली भारतीय थल सेना की प्रहारक टुकड़ियों को हवाई सुरक्षा कवरेज प्रदान करने को ध्यान में रखते हुए अभिकल्पित की गई है।

इस मिसाइल प्रणाली से जुड़ी रडार प्रणाली ने काफी अधिक दूरी से बंसी लक्ष्य की पहचान की। मिसाइल को उस समय पर प्रक्षेपित किया गया जबकि लक्ष्य प्रहार जोन में स्थित था और इस प्रकार इस मिसाइल ने लक्ष्य पर सीधा प्रहार करते हुए उसे ध्वस्त किया। इस दौरान रेडियो आवृत्ति (आरएफ) टोही निर्देशन द्वारा टर्मिनल एक्टिव दिशा – निर्देशन संकेत (होमिंग सिग्नल) प्राप्त हुए। तुरंत जवाबी कार्रवाई करते हुए जमीन से हवा में मार करने वाली मिसाइल (क्यूआरएसएएम) प्रणाली के इस परीक्षण क्रियाकलाप में रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन (डीआरडीओ) की विभिन्न

प्रयोगशालाओं अर्थात् रक्षा अनुसंधान एवं विकास प्रयोगशाला (डीआरडीएल), अनुसंधान केंद्र इमारत (आरसीआई), इलेक्ट्रॉनिक्स तथा रडार विकास स्थापना (एलआरडीई), अनुसंधान तथा विकास स्थापना (इंजीनियर्स) आरएंडडीई (इंजी), यंत्र अनुसंधान तथा विकास स्थापना (आईआरडीई) और एकीकृत परीक्षण परिसर (आईटीआर), चांदीपुर ने भाग लिया।

इस मिसाइल में प्रयोग में लाई गई आयुध प्रणाली से संबंधित विभिन्न उपकरणों को रक्षा क्षेत्र से जुड़ी सार्वजनिक क्षेत्र की अनेक कंपनियों अर्थात् भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड (बीईएल), भारत डायनॉमिक्स लिमिटेड (बीडीएल) और निजी क्षेत्र के उद्योग एलएंडटी द्वारा विकसित किया गया है। यह मिसाइल प्रणाली पूरी तरह से स्वदेश में तैयार की गई है और इसमें विभिन्न औद्योगिक

कंपनियों से रेडियो आवृत्ति (आरएफ) टोही निर्देशन प्रणाली, वैद्युत-यांत्रिक प्रवर्तन (ईएमए) प्रणाली एवं अन्य प्रणालियां प्राप्त की गई हैं। इस मिसाइल में फोर वाल्ड सक्रिय प्रावस्था व्यूह रडार प्रणाली प्रयोग में लाई गई है। इस मिसाइल के परीक्षण के दौरान परिसर में संस्थापित किए गए विभिन्न ट्रैकिंग केंद्रों, रडारों, वैद्युत प्रकाशीय ट्रैकिंग प्रणाली (ईओटीएस) तथा टेलिमीटरी स्टेशनों ने मिसाइल के विभिन्न क्रियाकलापों एवं पैरामीटरों पर निगरानी रखी।

इस उपलब्धि पर रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह एवं रक्षा अनुसंधान तथा विकास विभाग के सचिव और डीआरडीओ के अध्यक्ष डॉ. जी सतीश रेड्डी ने डीआरडीओ के वैज्ञानिकों को बधाई दी।

नवोन्मेष

संवर्धित पिनाका रॉकेट प्रणाली का सफल परीक्षण किया गया

संवर्धित पिनाका रॉकेट प्रणाली का 4 नवंबर 2020 को एकीकृत परीक्षण परिसर (आईटीआर), चांदीपुर से सफल परीक्षण किया गया। इस प्रणाली को पूर्व में अभिकल्पित एवं विकसित की गई कम दूरी की रॉकेट प्रणाली के स्थान पर अधिक दूरी तक मार करने में सक्षम रॉकेट प्रणाली को उपलब्ध कराने की दृष्टि से विकसित किया गया है। इस रॉकेट प्रणाली को डीआरडीओ की पुणे स्थित अधीनवर्ती प्रयोगशालाओं आयुध अनुसंधान एवं विकास स्थापना (एआरडीई) और उच्च ऊर्जा पदार्थ

अनुसंधान प्रयोगशाला (एचईएमआरएल) द्वारा अभिकल्पित एवं विकसित किया गया है।

परीक्षण के दौरान काफी कम अंतराल पर कुल छह रॉकेट प्रणालियां प्रक्षेपित की गई जिन्होंने मिशन से संबंधित सभी उद्देश्यों को सफलता पूर्वक प्राप्त किया गया। परीक्षण हेतु विकसित की गई इन सभी रॉकेट प्रणालियों को नागपुर स्थित मैसर्स इकॉनॉमिक एक्सप्लोसिव लिमिटेड द्वारा विनिर्मित किया गया है जिसे इन रॉकेट प्रणालियों को विनिर्मित करने के

लिए पूर्व में प्रौद्योगिकी अंतरित की गई थी। परीक्षण के दौरान परीक्षण से संबंधित सभी पैरामीटरों को एकीकृत परीक्षण परिसर (आईटीआर) के परिसर में लगाए गए यंत्रों जैसे कि टेलीमीटरी उपकरणों, रडारों और वैद्युत प्रकाशीय ट्रैकिंग प्रणालियों द्वारा निगरानी रखी और इन उपकरणों ने रॉकेट प्रणाली के सफल निष्पादन की पुष्टि की। पिनाका रॉकेट के इस संवर्धित संस्करण का उत्पादन वर्तमान में उत्पादित किए जा रहे पिनाका मार्क-1 रॉकेट के स्थान पर किया जाएगा।





एकीकृत परीक्षण परिसर (आई टी आर), चांदीपुर से संवर्धित पिनाका रॉकेट प्रणाली का परीक्षण

टैंक रोधी गाइडेड मिसाइल (ए टी जी एम) नाग का आखिरी प्रयोक्ता परीक्षण सफलतापूर्वक पूरा किया गया

तीसरी पीढ़ी की टैंक रोधी गाइडेड मिसाइल (एटीजीएम) नाग का आखिरी प्रयोक्ता परीक्षण 22 अक्टूबर 2020 को पोखरण रेंज में सफलतापूर्वक पूरा किया गया। इस मिसाइल को वास्तविक विस्फोटक शीर्ष से लैस किया गया था और पहले से पूर्व निर्धारित दूरी पर एक टैंक लक्ष्य को रखा गया था। नाग मिसाइल कैरियर (नामिका) से प्रक्षेपित किए जाने के पश्चात इस मिसाइल ने लक्ष्य टैंक के बख्तर का भेदन करते हुए उस पर सटीक प्रहार किया और उसे ध्वस्त कर दिया।

टैंक रोधी गाइडेड मिसाइल (एटीजीएम) नाग को डीआरडीओ द्वारा दिवस एवं रात्रि की परिस्थितियों में अत्यधिक सुरक्षित बख्तर सामग्रियों द्वारा संरक्षित शत्रु के

टैंकों को ध्वस्त करने के लिए विकसित किया गया है। इस मिसाइल को दागो

और भूल जाओ (फायर एंड फॉर्गेट) मोड में दागा जा सकता है तथा साथ ही यह



टैंक रोधी गाइडेड मिसाइल (एटीजीएम) नाग का प्रयोक्ता परीक्षण

मिसाइल टॉप अटैक सक्षमताओं से युक्त है और इसमें सम्मिश्र सामग्रियों एवं अत्यधिक प्रतिक्रियाशील बख्तर सामग्रियों से सुरक्षित किए गए किसी भी टैंक को ध्वस्त करने के लिए निष्क्रिय निर्देशन संकेत प्रणाली को प्रयोग में लाया जाता है। नाग मिसाइल कैरियर (नामिका) एक बी एम पी-2 टैंक

पर संस्थापित की गई प्रणाली है जिसके कारण इसे जल एवं स्थल दोनों ही स्थानों पर प्रयोग में लाया जा सकता है।

इस आखिरी प्रयोक्ता परीक्षण के सफलतापूर्वक पूरा हो जाने के बाद अब इस टैंक रोधी गाइडेड मिसाइल (एटीजीएम) नाग का उत्पादन आरंभ कर दिया जाएगा।

इस मिसाइल का उत्पादन रक्षा क्षेत्र से जुड़ी सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनी भारत डायनामिक्स लिमिटेड (बीडीएल) द्वारा किया जाएगा जबकि आयुध निर्माणी मेडक में नाग मिसाइल कैरियर (नामिका) का उत्पादन किया जाएगा।

प्रौद्योगिकी अंतरण हेतु लाइसेंस करार

रोग प्रतिरोधक क्षमता संवर्धक हर्बल पूरक औषधि डीआईपी -एचआईपी के उत्पादन के लिए प्रौद्योगिकी अंतरण से संबंधित लाइसेंस करार पर हस्ताक्षर

रक्षा शरीर-क्रिया तथा संबद्ध विज्ञान संस्थान (डिपास), दिल्ली द्वारा रोग प्रतिरोधक क्षमता संवर्धक हर्बल पूरक औषधि डीआईपी-एचआईपी के उत्पादन के लिए एडजाइन्ड (प्राइवेट) लिमिटेड, हैदराबाद के साथ प्रौद्योगिकी अंतरण से संबंधित लाइसेंस करार पर हस्ताक्षर किए गए। इस अवसर पर डॉ राजीव वार्ष्णेय, निदेशक, डिपास ने प्रौद्योगिकी विकासकर्ता डॉ. लिली गंजू, वैज्ञानिक 'जी' की उपस्थिति में हैदराबाद स्थित इस प्रतिष्ठान के प्रतिनिधि को प्रौद्योगिकी अंतरण से संबंधित लाइसेंस करार दस्तावेज का हस्तांतरण किया। रक्षा शरीर-क्रिया तथा संबद्ध विज्ञान संस्थान (डिपास) के भूतपूर्व निदेशक डॉ. भुवनेश कुमार भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

रोग प्रतिरोधक क्षमता संवर्धक हर्बल पूरक औषधि डीआईपी-एचआईपी को अधिक ऊंचाई पर पाए जाने वाले एक विशेष प्रकार के पौधे के हर्बल सत्व से तैयार किया गया है तथा सुरक्षा, रोग प्रतिरोधक क्षमता, और जैव-सक्रियता से संबंधित गुणों से जुड़े मानदंडों और साथ ही



रोग प्रतिरोधक क्षमता संवर्धक हर्बल पूरक औषधि डीआईपी-एचआईपी के उत्पादन के लिए प्रौद्योगिकी अंतरण से संबंधित लाइसेंस करार का हस्तांतरण

एक ऐसे समांगी वैक्सीन जिसे लगाए जाने पर संबंधित व्यक्ति के शरीर में लंबे समय तक एंटीबॉडी बना रहे, को तैयार करने के संबंध में एक सरल 'पॉइंट ऑफ यूज' मिश्रण प्रक्रम के संदर्भ में इस औषधि को तैयार करने, इसके स्थायित्व से संबंधित पैरामीटरों के संबंध में

भी व्यापक मूल्यांकन किए जाने पर यह पूरक औषधि व्यावसायिक तौर पर उपलब्ध अन्य रोग प्रतिरोधक क्षमता संवर्धक पूरक औषधियों की तुलना में पर्याप्त उच्च कोटि की सिद्ध हुई है।

श्रम दक्षता को ध्यान में रखते हुए अभिकल्पित किए गए पानी रखे जाने वाले लचीले बोतलों के उत्पादन के लिए प्रौद्योगिकी अंतरण से संबंधित लाइसेंस करार पर हस्ताक्षर किए गए

रक्षा शरीर-क्रिया तथा संबद्ध विज्ञान संस्थान (डिपास) ने कैटेगरी 'ए' के तहत आने वाले 'श्रम दक्षता को ध्यान में रखते हुए अभिकल्पित किए गए पानी रखे जाने हेतु प्रयोग में लाए जाने वाले लचीले

(फ्लेक्सिबल) बोतलों' के उत्पादन के लिए भी मैसर्स सूरज प्लास्टिक इंडस्ट्रीज, दिल्ली; मैसर्स द मोल्ड्स, नई दिल्ली; और मैसर्स सैक्शन फ्लूड सीलाइन डिवाइसेज, राजस्थान के साथ 19 अक्टूबर 2020 को

प्रौद्योगिकी अंतरण से संबंधित लाइसेंस करार पर हस्ताक्षर किए। इस अवसर पर डॉ राजीव वार्ष्णेय, निदेशक, डिपास ने प्रौद्योगिकी आविष्कारकर्ता डॉ. मधुसूदन पाल, वैज्ञानिक 'एफ' और उनकी टीम के

सदस्यों की उपस्थिति में इन प्रतिष्ठानों के प्रतिनिधियों को प्रौद्योगिकी अंतरण से संबंधित लाइसेंस करार दस्तावेज का हस्तांतरण किया। 'श्रम दक्षता को ध्यान में रखते हुए अभिकल्पित किए गए पानी रखे जाने वाले लचीले (फ्लेक्सिबल) बोटलों को बीपीए-मुक्त/खाद्य श्रेणी की सामग्रियों को प्रयोग में लाकर विनिर्मित किया गया है। इस बोटल को प्रयोक्ता द्वारा अपनी इच्छा के अनुसार दो चरणों वाले एक फिल्टर यूनिट (जिसमें सक्रीयित चारकोल एवं खोखली झिल्ली लगी हुई है) के साथ जोड़ा जा सकता है और साथ ही इसे प्रयोक्ता इस बोटल में उपलब्ध कराए गए एक D-रिंग के माध्यम से बैकपैक से भी जोड़ सकता है। बोटल की संरचना पर बाह्य तापमान में परिवर्तन का कोई प्रभाव



श्रम दक्षता को ध्यान में रखते हुए अभिकल्पित किए गए पानी रखे जाने वाले लचीले (फ्लेक्सिबल) बोटल तथा प्रौद्योगिकी अंतरण से संबंधित लाइसेंस करार दस्तावेज का हस्तांतरण

नहीं पड़ता अर्थात् तापीय दृष्टि से इसकी संरचना स्थायी है ($-45\pm 5^{\circ}\text{C}$ से $+100\pm 5^{\circ}\text{C}$), यह शून्य से भी कम (-20°C) तापमान पर कम से कम चार घंटे तक पानी को द्रव रूप में बनाए रख सकता है तथा इसे

पानी की बोटल, हॉट पैक, आइस पैक या छोटे तकिए के रूप में भी प्रयोग में लाया जा सकता है। इस बोटल को सशस्त्र बलों और साथ में केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बलों द्वारा भी पर्यावरण की चरम ताप दशाओं में प्रयोग में लाया जाएगा।

डॉ. जी सतीश रेड्डी द्वारा जैव सुरक्षा स्तर -3 प्रयोगशाला का उद्घाटन किया गया

रक्षा अनुसंधान तथा विकास विभाग के सचिव एवं डीआरडीओ के अध्यक्ष डॉ. जी सतीश रेड्डी ने 23 अक्टूबर 2020 को नाभिकीय औषधि तथा संबद्ध विज्ञान संस्थान (इनमास), दिल्ली में ऋणात्मक वायुदाब एवं उन्नत नियंत्रण मैकेनिज्म से युक्त एक फुल स्केल कंटेनराइज्ड मॉड्यूलर बायो सेप्टी लेवल-3 (बीएसएल-3) प्रयोगशाला का उद्घाटन किया। डॉ. वाराप्रसाद राव, विशिष्ट वैज्ञानिक तथा महानिदेशक (एचआर), डीआरडीओ, डॉ. जी एन राव, महानिदेशक (पीसीएंडएसआई), डीआरडीओ और श्री एस के जोशी, डीआरडीओ के अध्यक्ष के प्रौद्योगिकी सलाहकार भी इस समारोह में उपस्थित थे।

इस प्रयोगशाला में उन्नत एयर लॉक सिस्टम, बहिः स्त्राव शोधन संयंत्र, आपात स्थिति में प्रयोग में लाए जाने वाला शावर, विसंदूषण हेतु प्रयोग में लाए जाने वाला कंप्यूटरीकृत नियंत्रण मैकेनिज्म, एक बड़े क्षेत्र को संक्रमण मुक्त करने के लिए प्रयोग

में लाए जाने वाला पराबैंगनी विसंक्रमण उपकरण (यूवी डिसइन्फेक्शन मैकेनिज्म), प्रयोगशाला कार्मिकों द्वारा प्रयोगशाला में प्रयोग में लाए जाने वाले वस्त्रों को पहनने और उतारने के लिए अलग प्रकोष्ठ, आपात स्थिति में प्रयोगशाला से बाहर निकलने के लिए आपात निकास द्वार जैसी सुविधाएं उपलब्ध कराई गई हैं और इसके साथ ही उच्च वियोजन से युक्त सीसीटीवी प्रणाली, पूर्ण वैद्युत बैकअप और उपलब्ध कराई

गई निर्बाध विद्युत आपूर्ति प्रणाली इस प्रयोगशाला की कुछ अन्य विशेषताएं हैं। इस प्रयोगशाला में एक पृथक कोशिका संवर्धन प्रकोष्ठ स्थापित किया गया है और स्तर 3 की वैश्विक महामारियों से निपटने के लिए इस प्रयोगशाला में आवश्यक अनुसंधान एवं विकास (आरएंडडी) क्रियाकलापों के लिए अनेक अन्य उन्नत सुविधाएं भी उपलब्ध कराई गई हैं।



इनमास में बायो सेप्टी लेवल -3 प्रयोगशाला का उद्घाटन करते हुए रक्षा अनुसंधान तथा विकास विभाग के सचिव एवं डीआरडीओ के अध्यक्ष डॉ. जी सतीश रेड्डी

घटनाक्रम

रक्षा मंत्री ने डी आर डी ओ भवन में उपग्रह रोधी मिसाइल मॉडल का अनावरण किया

माननीय रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह ने डीआरडीओ भवन परिसर में संस्थापित किए गए उपग्रह रोधी (ए-सैट) मिसाइल के एक मॉडल का 9 नवंबर 2020 को केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री माननीय श्री नितिन गडकरी एवं रक्षा अनुसंधान तथा विकास विभाग के सचिव और डीआरडी ओ के अध्यक्ष डॉ. जी सतीश रेड्डी की गरिमामय उपस्थिति में अनावरण किया।

उपग्रह रोधी (ए-सैट) मिसाइल परीक्षण हेतु क्रियान्वित किया गया मिशन, जिसका नाम 'मिशन शक्ति' रखा गया था, को ओडिशा के ए पी जे अब्दुल कलाम द्वीप से 27 मार्च 2019 को सफलतापूर्वक अंजाम दिया गया था जिसके दौरान पृथ्वी की निचली कक्षा में तीव्र गति से गतिशील

एक भारतीय उपग्रह को अत्यधिक सटीक रूप में निशाना बनाकर ध्वस्त कर दिया गया था। इस अत्यधिक जटिल मिशन को पूर्ण परिशुद्धता के साथ अंजाम दिया गया था। मिशन शक्ति की सफलता से भारत बाह्य अंतरिक्ष में अपने उपग्रहों को सुरक्षित रखने की क्षमता से युक्त विश्व का चौथा देश बन गया है।

उपग्रह रोधी मिसाइल मॉडल के अनावरण के अवसर पर माननीय रक्षा मंत्री ने देश के वैज्ञानिकों की टीम को उनके द्वारा प्राप्त की गई इस सर्वथा नवीन उपलब्धि के लिए उन्हें बधाई दी। इस अवसर पर बोलते हुए डॉ सतीश रेड्डी ने कहा कि डीआरडीओ भवन परिसर में उपग्रह रोधी (ए-सैट) मिसाइल के इस मॉडल को

संस्थापित किए जाने से डीआरडीओ के वैज्ञानिकों को भविष्य में इसी प्रकार के अनेक अन्य चुनौतीपूर्ण मिशनों पर कार्य करने की प्रेरणा प्राप्त होगी।

इससे पूर्व माननीय श्री राजनाथ सिंह और श्री नितिन गडकरी के समक्ष यात्री बसों में प्रयोग में लाए जाने के लिए अग्नि संसूचन तथा संदमन प्रणाली (एफडीएसएस) का प्रदर्शन कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों के समक्ष यात्री कंपार्टमेंट की सुरक्षा हेतु प्रयोग में लाए जाने वाली जल कोहरा आधारित अग्नि संसूचन तथा संदमन प्रणाली (एफडीएसएस) तथा इंजन में आग लगने की स्थिति में प्रयोग में लाए जाने के लिए एरोसॉल आधारित अग्नि संसूचन तथा



डीआरडीओ भवन में ए-सैट मिसाइल के मॉडल का अनावरण करते हुए माननीय रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह। इस अवसर पर केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री माननीय श्री नितिन गडकरी एवं रक्षा अनुसंधान तथा विकास विभाग के सचिव और डीआरडीओ के अध्यक्ष डॉ. जी सतीश रेड्डी भी उपस्थित थे।

संदमन प्रणाली (एफडीएसएस) का प्रदर्शन किया गया।

इस प्रौद्योगिकी को डीआरडीओ की दिल्ली स्थित प्रयोगशाला अग्नि, पर्यावरण एवं विस्फोटक सुरक्षा केंद्र (सीफीस) द्वारा विकसित किया गया है। यह प्रणाली यात्री

कंपार्टमेंट में लगी आग को 30 सेकेंड से भी कम अवधि के भीतर संसूचित कर सकती है और उसे 60 सेकेंड के भीतर बुझा सकती है और इस प्रकार इस प्रणाली के प्रयोग द्वारा जान और माल की रक्षा करने में काफी हद तक सफलता प्राप्त की जा

सकती है।

श्री गडकरी ने इस प्रौद्योगिकी को विकसित किए जाने पर अपना संतोष जाहिर किया और इस प्रौद्योगिकी को उत्पादन हेतु उद्योगों को अंतरित करने की इच्छा व्यक्त की।

माननीय रक्षा मंत्री द्वारा डी आर डी ओ प्रोक्वोरमेंट मैनुअल 2020 जारी किया गया

'आत्मनिर्भर भारत' के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए रक्षा अनुसंधान एवं विकास (आरएंडडी) क्रियाकलापों में स्टार्टअप कंपनियों और लघु एवं मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) सहित भारतीय उद्योगों की अधिकाधिक भागीदारी को बढ़ावा देने की दृष्टि से रक्षा मंत्री माननीय श्री राजनाथ सिंह ने 20 अक्टूबर 2020 को डीआरडीओ प्रोक्वोरमेंट मैनुअल 2020 (पीएम-2020) के नए संस्करण का विमोचन किया।

इस अवसर पर बोलते हुए माननीय श्री राजनाथ सिंह ने कहा, 'नए प्रोक्वोरमेंट मैनुअल को जारी किए जाने से रक्षा सामग्रियों की अधिप्राप्ति की

प्रक्रिया सरल होगी जिससे रक्षा क्षेत्र से जुड़े स्वदेशी उद्योगों को सुविधा प्राप्त होगी और रक्षा उत्पादों के अभिकल्प एवं विकास से संबंधित क्रियाकलापों में उनकी अधिकाधिक प्रतिभागिता सुनिश्चित होगी। प्रोक्वोरमेंट मैनुअल 2020 प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के आत्मनिर्भर भारत के स्वप्न को पूरा करने में सहायक सिद्ध होगा। आपने डी आर डी ओ प्रोक्वोरमेंट मैनुअल 2020 के संशोधित संस्करण को तैयार करने में डीआरडीओ तथा रक्षा मंत्रालय के वित्त स्कंध के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा किए गए योगदान की सराहना की।

डीआरडीओ प्रोक्वोरमेंट मैनुअल

2020 अनुसंधान तथा विकास परियोजनाओं/कार्यक्रमों को तेजी से निष्पादित करने तथा विभिन्न अनुसंधान तथा विकास परियोजनाओं में उद्योगों की प्रतिभागिता को बढ़ावा देने में सहायक सिद्ध होगा। अग्रिम धन राशि जमा के लिए बोली प्रतिभूति घोषणा विकल्प, अग्रिम भुगतान के लिए प्रारंभिक सीमा में वृद्धि, सर्वाधिक कम बोली लगाने वाले पहले बोलीदाता के बोली से बाहर निकल जाने की स्थिति में सबसे कम बोली लगाने वाले दूसरे बोलीदाता के पक्ष में ऑर्डर जारी करना इस नए मैनुअल की कुछ मुख्य विशेषताएं हैं जो परियोजनाओं के तेजी से निष्पादन में उद्योगों के लिए



डीआरडीओ प्रोक्वोरमेंट मैनुअल 2020 (पीएम-2020) जारी करते हुए माननीय रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह

सहायक सिद्ध होंगी।

प्रोक्योरमेंट मैनुअल 2020 में शामिल किए गए कुछ अन्य समर्थकारी उपायों में 10 लाख रुपए तक की राशि के संबंध में बोली प्रतिभूति और निष्पादन प्रतिभूति में छूट देना, ऐसे वाणिज्यिक रूप से बिकने वाली सीओटीएस (कमर्शियल ऑफ द सेल्फ) वस्तुओं/सेवाओं जिनका मूल्य निर्धारण बाजार शक्तियों द्वारा किया जाता है, के संबंध में कोई भी मोल-तोल न करना आदि, उल्लेखनीय हैं।

सेवा संविदाओं के संबंध में निष्पादन प्रतिभूति को कुल संविदा मूल्य के बजाय

भुगतान चक्र से जोड़ा गया है। विकासकर्ता भागीदारों से भंडार सामग्रियों की अधिप्राप्ति, ठेकेदार को बिना कोई शुल्क लिए जारी किए गए फ्री ईश्यू मैटेरियल के संबंध में बैंक गारंटी के बजाय बीमा कवर के माध्यम से सुरक्षा प्रदान करना संशोधित नए प्रोक्योरमेंट मैनुअल 2020 में उपलब्ध कराए गए अन्य सहायक उपाय हैं जिनसे उद्योगों को और अधिक सहायता प्राप्त होगी।

नए प्रोक्योरमेंट मैनुअल 2020 में विकास से संबंधित संविदाओं के लिए परिसमापन क्षतिपूर्ति (एलडी) दर में कमी की गई है। सुपुर्दगी अवधि में विस्तार की

प्रक्रिया भी सरल की गई है ताकि निर्णय करने में देरी न हो। इनके साथ ही, नए मैनुअल में अनेक आंतरिक प्रक्रियाओं को भी और अधिक सरल बनाया गया है ताकि उद्योगों को बिना किसी विलंब के विभिन्न कार्यों के निष्पादन हेतु संविदा प्रक्रिया में शामिल किया जा सके।

इस अवसर पर आयोजित किए गए कार्यक्रम में अन्य गणमान्य व्यक्तियों सहित रक्षा अनुसंधान तथा विकास विभाग के सचिव एवं डीआरडीओ के अध्यक्ष डॉ. जी सतीश रेड्डी, रक्षा वित्त सचिव श्रीमती गार्गी कौल तथा रक्षा मंत्रालय के अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण शामिल हुए।

गांधी जयंती समारोहों का आयोजन

उन्नत प्रणाली प्रयोगशाला, हैदराबाद

उन्नत प्रणाली प्रयोगशाला (एएसएल), हैदराबाद में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 150वीं जयंती काफ़ी धूमधाम से मनाई गई। इस अवसर पर 25 सितंबर 2020 से 02 अक्टूबर 2020 के दौरान उन्नत प्रणाली प्रयोगशाला (एएसएल) के सभी कार्य केंद्रों में व्यापक स्वच्छता अभियान का आयोजन किया गया। इस दौरान प्रयोगशाला के कर्मचारियों ने अपनी स्वेच्छा से अनुपयोगी सामग्रियों की छंटाई की और उन्हें अलग

करके उनका उचित निपटान किया तथा कार्य क्षेत्र एवं आसपास के क्षेत्रों की भी सफाई की। इस दौरान महात्मा गांधी के जीवन और दर्शन पर एक ऑनलाइन प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया। महात्मा गांधी के जन्म दिवस 02 अक्टूबर, 2020 को प्रयोगशाला के निदेशक डॉ. एम रमा मनोहर बाबू तथा उनके साथ प्रयोगशाला के कार्यक्रम निदेशकों, सह निदेशकों, समूह निदेशकों, प्रौद्योगिकी निदेशकों, परियोजना निदेशकों और वरिष्ठ वैज्ञानिकों ने राष्ट्रपिता को श्रद्धांजलि अर्पित की और इस अवसर पर

आयोजित की गई शांति यात्रा (पीस वाक) और पौधा रोपण कार्यक्रम में भाग लिया।

रक्षा उड्डयानिकी अनुसंधान स्थापना, बेंगलुरु

रक्षा उड्डयानिकी अनुसंधान स्थापना (डेयर), बेंगलुरु में राष्ट्रपिता के जन्म दिवस के अवसर पर उन्हें पुष्पांजलि अर्पित की गई और स्वच्छता अभियान का आयोजन किया गया। रक्षा उड्डयानिकी अनुसंधान स्थापना (डेयर) के तकनीकी सूचना केंद्र द्वारा गांधी जी की 150वीं जयंती के अवसर पर विभिन्न किस्मों की दाल और चावल का प्रयोग करके उनका एक भव्य चित्र तैयार किया गया।



राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 150वीं जयंती का सामूहिक चित्र



राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के जन्म दिवस पर पुष्पांजलि अर्पित करते हुए

यंत्र अनुसंधान तथा विकास स्थापना, देहरादून

यंत्र अनुसंधान तथा विकास स्थापना (आईआरडीई), देहरादून में डीआरडीओ मुख्यालय से प्राप्त अनुदेशों और डॉ. बी. के. दास, उत्कृष्ट वैज्ञानिक तथा निदेशक, आईआरडीई के मार्गदर्शन में 25 सितंबर 2020 से 02 अक्टूबर 2020 के दौरान राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 150 वीं जयंती मनाई गई। इस दौरान आयोजित किए गए कार्यक्रमों द्वारा राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के जीवन और स्वच्छता के महत्व के संबंध में यंत्र अनुसंधान तथा विकास स्थापना (आईआरडीई) के कर्मचारियों एवं साथ ही अन्य व्यक्तियों में भी जागरूकता उत्पन्न की गई। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 150वीं जयंती के अवसर पर आयोजित किए गए विभिन्न क्रियाकलापों में यंत्र अनुसंधान तथा विकास स्थापना (आईआरडीई) के कर्मचारियों और साथ ही उनके परिवार के सदस्यों ने भी काफी बढ़ चढ़कर भाग लिया। इस दौरान आयोजित किए गए स्वच्छता अभियान में प्रतिदिन 100 से भी अधिक व्यक्तियों ने भाग लिया। इस अवसर पर लोगों के बीच श्रव्य-दृश्य माध्यम के द्वारा महात्मा गांधी के जीवन और समाज के लिए उनके द्वारा दिए गए संदेश का

प्रचार-प्रसार किया गया।

इस दौरान 27 सितंबर 2020 को आयोजित की गई परिवार संघ्या कार्यक्रम में यंत्र अनुसंधान तथा विकास स्थापना (आईआरडीई) के कर्मचारियों ने काफी बढ़ चढ़कर भाग लिया। परिवार संघ्या कार्यक्रम में भाग लेने वाले सभी व्यक्तियों ने इस कार्यक्रम की मुक्त कंठ से प्रशंसा की। इस अवसर पर आयोजित की गई नारा लेखन, प्रश्नोत्तरी एवं पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिताओं में काफी अधिक संख्या में बच्चों ने भाग लिया। 01 अक्टूबर 2020 को

समापन कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिस अवसर पर आयोजित किए गए एक लाइव प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम में प्रतिभागियों द्वारा काफी बढ़-चढ़ कर भाग लिया गया। यदि संक्षेप में कहा जाए तो हम यह कह सकते हैं कि यंत्र अनुसंधान तथा विकास स्थापना (आईआरडीई), देहरादून द्वारा एक सप्ताह की अवधि के दौरान महात्मा गांधी की 150वीं जयंती समारोह का आयोजन अत्यधिक उत्तरदायित्व के साथ किया गया और राष्ट्रपिता द्वारा दिए गए संदेशों और उनके सिद्धांतों का अनुपालन किया गया।



यंत्र अनुसंधान तथा विकास स्थापना (आईआरडीई), देहरादून में गांधी जयंती समारोह का आयोजन

एकीकृत परीक्षण परिसर, चांदीपुर

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 150वीं जयंती समारोह के अवसर पर एकीकृत परीक्षण परिसर (आईटीआर), चांदीपुर द्वारा बालासोर डिफेंस कॉलोनी में एक स्वच्छता अभियान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आईटीआर डिफेंस कॉलोनी में स्वच्छता अभियान चलाए जाने के साथ-साथ रश्मि परिसर में जागरूकता कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया। इस दौरान 'स्वच्छ एवं हरित भारत' के उद्देश्यों को प्राप्त करने को ध्यान में रखते हुए विभिन्न क्रियाकलापों का आयोजन किया गया। इस दौरान एकत्र किए गए



एकीकृत परीक्षण परिसर (आईटीआर) में गांधी जयंती समारोह का आयोजन

प्लास्टिक कचरे का सही रूप में निपटान किया गया। अभियान का आयोजन वैश्विक महामारी कोविड-19 से बचाव के संबंध में जारी किए गए दिशानिर्देशों का अनुपालन

करते हुए किया गया। कार्यक्रम का आयोजन श्री पी एन पांडा और आपकी टीम द्वारा किया गया। इस पवित्र उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए एकीकृत परीक्षण

परिसर (आईटीआर) के लगभग 100 सदस्यों ने भाग लिया और इन उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु स्वेच्छा से योगदान किया।

रक्षा वैज्ञानिक सूचना तथा प्रलेखन केंद्र में चिकित्सा शिविर का आयोजन

रक्षा वैज्ञानिक सूचना तथा प्रलेखन केंद्र (डेसीडॉक) में नाभिकीय औषधि तथा संबद्ध विज्ञान संस्थान (इनमास), दिल्ली के सहयोग से वैश्विक महामारी कोविड-19 के विरुद्ध मानव शरीर में बनने वाले एंटीबॉडी का निर्धारण करने के लिए 21 अक्टूबर 2020 को एक चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। डॉ राजीव विज्ज, वैज्ञानिक 'जी' इस चिकित्सा शिविर के संयोजक थे। डॉ. अलका सूरी, निदेशक, डेसीडॉक ने वैश्विक महामारी कोविड-19 के प्रसार पर रोक लगाने के लिए रक्षा वैज्ञानिक सूचना तथा प्रलेखन केंद्र (डेसीडॉक) द्वारा आगे आकर किए जा रहे इन क्रियाकलापों की सराहना की। इस चिकित्सा शिविर में डीआरडीओ की मेटकॉफ हाउस स्थित



रक्षा वैज्ञानिक सूचना तथा प्रलेखन केंद्र में एंटीबॉडी परीक्षण

प्रयोगशालाओं में कार्य कर रहे एक सौ छिहत्तर कर्मचारियों की जांच की गई।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2020

एकीकृत परीक्षण परिसर (आई टी आर), चांदीपुर

एकीकृत परीक्षण परिसर (आईटीआर), चांदीपुर में 28 अक्टूबर 2020 से 02 नवंबर 2020 के दौरान सतर्कता जागरूकता सप्ताह-2020 का आयोजन किया गया। इस दौरान कार्यालय परिसर के भीतरी और बाहरी हिस्सों में सतर्कता जागरूकता को बढ़ावा देने वाले बैनर प्रदर्शित किए गए। इस अवसर पर श्री एच.के. रथ, निदेशक, आईटीआर ने एकीकृत परीक्षण परिसर (आईटीआर) के सभी कर्मचारियों को सत्य निष्ठा शपथ दिलाई। इस सप्ताह के दौरान एकीकृत परीक्षण परिसर (आईटीआर) के



एकीकृत परीक्षण परिसर (आईटीआर), चांदीपुर में आयोजित किए गए सतर्कता जागरूकता सप्ताह के दौरान सत्य निष्ठा शपथ लेते हुए आईटीआर के कर्मचारीगण

कर्मचारियों को केंद्रीय सतर्कता आयोग के पोर्टल पर जाकर ई-शपथ लेने के लिए प्रोत्साहित भी किया गया।

इस अवसर पर बोलते हुए निदेशक, आईटीआर ने एकीकृत परीक्षण परिसर (आईटीआर) के सभी कर्मचारियों एवं अधिकारियों से जीवन के सभी क्षेत्रों में ईमानदारी एवं सत्य निष्ठा को बनाए रखने

का अनुरोध किया और उनसे कहा कि वे सभी भ्रष्टाचार के विरुद्ध सदैव सतर्क बने रहें तथा एक सतर्क और वैभवशाली भारत को निर्मित करने की दिशा में योगदान करें। इस अवसर पर एकीकृत परीक्षण परिसर (आईटीआर) के सतर्कता अधिकारी श्री नीलाद्री रॉय, वैज्ञानिक 'जी' द्वारा एक प्रस्तुतीकरण व्याख्यान दिया

गया जिसके पश्चात सतर्कता जागरूकता के संबंध में वीडियो प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का आयोजन श्री पी एन पांडा, वैज्ञानिक 'एफ', एजीडी (एचआर) और आपकी टीम द्वारा किया गया था।

नौसेना भौतिक तथा समुद्र विज्ञान प्रयोगशाला (एनपीओएल), कोच्चि

नौसेना भौतिक तथा समुद्र विज्ञान प्रयोगशाला (एनपीओएल), कोच्चि द्वारा भ्रष्टाचार निवारण तथा भ्रष्टाचार के विरुद्ध लड़ाई में अपना योगदान करने और आम जन में भ्रष्टाचार के विरुद्ध जागरूकता सृजित करने के उद्देश्य से 27 अक्टूबर 2020 से 02 नवंबर 2020 के दौरान सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन किया गया जिसका प्रतिपाद्य केंद्रीय सतर्कता आयोग द्वारा निर्धारित विषय 'सतर्क भारत समृद्ध भारत' था। नौसेना भौतिक तथा समुद्र विज्ञान प्रयोगशाला (एनपीओएल) में सतर्कता जागरूकता सप्ताह की शुरुआत श्री एस विजयन पिल्लई, उत्कृष्ट वैज्ञानिक तथा निदेशक, एनपीओएल द्वारा नौसेना भौतिक तथा समुद्र विज्ञान प्रयोगशाला (एनपीओएल) के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को सत्यनिष्ठा की शपथ दिलाए जाने के साथ हुई। इस दौरान सतर्कता सप्ताह के प्रतिपाद्य को प्रदर्शित करते हुए प्रयोगशाला के मुख्य प्रवेश द्वार, मुख्य प्रकोष्ठ और तकनीकी परिसर में बड़े-बड़े आकार के सुस्पष्ट बैनर लगाए गए। इस अवसर पर प्रयोगशाला के सभी भवनों में सभी नोटिस बोर्डों पर सतर्कता और भ्रष्टाचार मुक्त आचरण के महत्व को दर्शाते हुए पोस्टर प्रदर्शित किए गए। प्रयोगशाला के सभी कर्मचारियों में सत्य निष्ठा शपथ मुद्रित किया गया वर्ष 2021 का पॉकेट



श्री एस विजयन पिल्लई, उत्कृष्ट वैज्ञानिक तथा निदेशक एनपीओएल ने नौसेना भौतिक तथा समुद्र विज्ञान प्रयोगशाला (एनपीओएल) के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को सत्यनिष्ठा की शपथ दिलाई

कैलेंडर वितरित किया गया। इस दौरान प्रयोगशाला के कर्मचारियों तथा उनके परिवार के सदस्यों एवं मित्रों को केंद्रीय सतर्कता आयोग के पोर्टल पर जाकर ई-शपथ लेने के लिए भी प्रोत्साहित किया गया। प्रयोगशाला के विभिन्न प्रभागों/समूहों को उनके क्रियाकलापों में सतर्कता के महत्व के संबंध में जागरूक बनाने के लिए एक अभियान रूप में विभिन्न कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया। इन सभी कार्यक्रमों का आयोजन वैश्विक महामारी कोविड-19 के प्रसार पर रोक

लगाने के संबंध में जारी किए गए दिशा-निर्देशों का कड़ाई से अनुपालन करते हुए किया गया।

डॉ मनोज एन आर, वैज्ञानिक 'एफ', समूह निदेशक (सतर्कता तथा सुरक्षा) और लेफ्टिनेंट कर्नल ललित भट्ट, वरिष्ठ सुरक्षा अधिकारी ने नौसेना भौतिक तथा समुद्र विज्ञान प्रयोगशाला (एनपीओएल) में आयोजित किए गए सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2020 के विभिन्न कार्यक्रमों का संयोजन किया।

मानव संसाधन विकास संबंधी क्रियाकलाप

डी एन ए बारकोडिंग और बर्ड स्ट्राइक नमूना संग्रहण विषय पर कार्यशाला का आयोजन

रक्षा शरीर क्रिया तथा संबद्ध विज्ञान संस्थान (डिपास), दिल्ली में 5 अगस्त 2020 को 'डीएनए बारकोडिंग और विमान से पक्षियों के टकराने (बर्ड स्ट्राइक) के संबंध में नमूना संग्रहण' विषय पर एक ऑनलाइन कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस पाठ्यक्रम में इंडियन कोस्ट गार्ड एयर स्टेशन (आईसीजीएएस), दमन, इंडियन कोस्ट गार्ड एयर एनक्लेव (आईसीजीएई), कोच्चि, इंडियन कोस्ट गार्ड एयर एनक्लेव (आईसीजीएई), न्यू मंगलौर, इंडियन कोस्ट गार्ड एयर एनक्लेव (आईसीजीएई), रत्नागिरी, इंडियन कोस्ट गार्ड एयर एनक्लेव (आईसीजीएई), पोरबंदर, तथा देशभर में स्थित 842 स्ववैज्ञान (सीजी) स्टेशनों से 36 प्रतिभागियों ने भाग लिया। डॉ. यामिनी सिंह, वैज्ञानिक 'ई' इस कार्यशाला की संयोजक थीं। कार्यशाला के दौरान डॉ. यामिनी सिंह ने 'डीएनए बारकोडिंग और बर्ड स्ट्राइक नमूना संग्रहण' विषय पर व्याख्यान दिया। श्री सायर सिंह, तकनीकी अधिकारी 'ए' द्वारा नमूना संग्रहण विषय पर प्रदर्शन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इंडियन कोस्ट गार्ड एयर स्टेशन (आईसीजीएएस), दमन से कमांडेंट



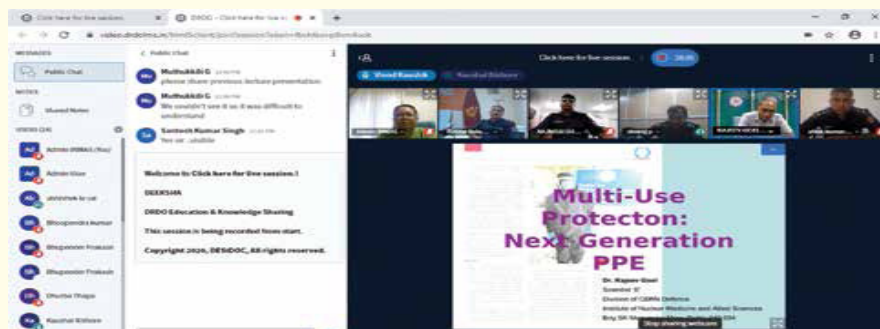
डीएनए बारकोडिंग और बर्ड स्ट्राइक नमूना संग्रहण विषय पर एक ऑनलाइन कार्यशाला का आयोजन

मोहसिन खान और कमांडेंट अभिषेक सक्सेना, इंडियन कोस्ट गार्ड एयर एनक्लेव (आईसीजीएई), कोच्चि से कमांडेंट आरवी तल्के और कमांडेंट डी एच पांड्या, इंडियन कोस्ट गार्ड एयर एनक्लेव (आईसीजीएई), पोरबंदर से कमांडेंट अखिल गुलेरिया और उनके सहयोगियों ने कार्यशाला के

दौरान परस्पर विचार-विमर्श किया तथा इस कार्यशाला में अत्यधिक सक्रिय रूप में भाग लिया। इस कार्यशाला के दौरान विशिष्ट प्रजातियों की पहचान करने के लिए डीएनए बारकोडिंग के विभिन्न तरीकों और बर्ड स्ट्राइक नमूना संग्रहण के महत्व पर विचार-विमर्श किया गया।

सीबीआरएन दुर्घटना की किसी भी आपात स्थिति से निपटने के लिए आपात प्रबंधन विषय पर पाठ्यक्रम का आयोजन

नाभिकीय औषधि तथा संबद्ध विज्ञान संस्थान (इनमास), दिल्ली ने रक्षा वैज्ञानिक सूचना तथा प्रलेखन केंद्र (डेसीडॉक) द्वारा विकसित किए गए वर्चुअल प्लेटफॉर्म 'शिक्षा' के माध्यम से 5-9 अक्टूबर 2020 के दौरान वैश्विक महामारी कोविड-19 के विशेष संदर्भ में 'रासायनिक, जैविक, रेडियोधर्मी और परमाणु (सीबीआरएन) दुर्घटना की किसी भी आपात स्थिति से



ऑनलाइन पाठ्यक्रम का आयोजन

निपटने के लिए आपात प्रबंधन' विषय पर एक ऑनलाइन प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का आयोजन किया। इस पाठ्यक्रम में दिल्ली पुलिस, दिल्ली अग्निशमन सेवा, राष्ट्रीय

सुरक्षा गार्ड (एनएसजी) और राष्ट्रीय आपदा अनुक्रिया बल (एनडीआरएफ) से प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस पाठ्यक्रम के दौरान 18 वक्ताओं द्वारा विभिन्न विषयों

पर व्याख्यान दिए गए। सुश्री एम मेमिता देवी, वैज्ञानिक 'ई' इस पाठ्यक्रम की संयोजक थीं।

संगठनात्मक आचरण विषय पर पाठ्यक्रम का आयोजन

प्रौद्योगिकी प्रबंधन संस्थान (आईटीएम), मसूरी द्वारा रक्षा वैज्ञानिक सूचना तथा प्रलेखन केंद्र (डेसीडॉक), दिल्ली के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए 19-21 अक्टूबर 2020 के दौरान संगठनात्मक आचरण विषय पर तीन दिवसीय ऑनलाइन पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया। इस पाठ्यक्रम में रक्षा वैज्ञानिक सूचना तथा प्रलेखन केंद्र (डेसीडॉक) से कुल 23 अधिकारियों ने भाग लिया। पाठ्यक्रम के दौरान प्रौद्योगिकी प्रबंधन संस्थान (आईटीएम) के संकाय सदस्यों द्वारा ऑनलाइन माध्यम का प्रयोग करके व्याख्यान दिए गए। इस कार्यक्रम को आयोजित करने का उद्देश्य प्रतिभागियों को संगठनात्मक आचरण के विभिन्न पहलुओं के संबंध में अवगत कराना था ताकि उनमें संगठनात्मक प्रभावकारिता लाई जा सके। इस ऑनलाइन पाठ्यक्रम का उद्घाटन श्री संजय टंडन, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, आईटीएम और डॉ. अलका सूरी, निदेशक डेसीडॉक



संगठनात्मक आचरण विषय पर पाठ्यक्रम

द्वारा किया गया।

पाठ्यक्रम के दौरान विभिन्न विषयों अर्थात संगठनात्मक आचरण की प्रस्तावना तथा टीम भावना का निर्माण, व्यक्तित्व निर्माण तथा आचरण, अभिप्रेरण, आदि विषयों पर संकाय सदस्यों द्वारा अत्यधिक सारगर्भित व्याख्यान दिए गए। पाठ्यक्रम के अंत में श्री संजय टंडन, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, आईटीएम द्वारा समापन भाषण

दिया गया और श्री जितेंद्र सिंह वैज्ञानिक 'एफ', आईटीएम, मसूरी ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया।

डॉ. अलका सूरी ने ऑनलाइन माध्यम का प्रयोग करके इस पाठ्यक्रम को आयोजित करने के लिए आईटीएम मसूरी द्वारा किए गए प्रयासों की सराहना की। पाठ्यक्रम की इसके प्रतिभागियों द्वारा मुक्त कंठ से प्रशंसा की गई।

टीम भावना निर्माण और नेतृत्व विकास विषय पर पाठ्यक्रम का आयोजन

प्रौद्योगिकी प्रबंधन संस्थान (आईटीएम), मसूरी द्वारा चरम प्राक्षेपिकी अनुसंधान प्रयोगशाला (टीबीआरएल), चंडीगढ़ के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए 12 अक्टूबर 2020 से 14 अक्टूबर 2020 के दौरान 'टीम भावना निर्माण और नेतृत्व विकास' विषय पर तीन दिवसीय ऑनलाइन पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया। इस पाठ्यक्रम में चरम प्राक्षेपिक अनुसंधान प्रयोगशाला (टीबीआरएल), चंडीगढ़ से रक्षा

अनुसंधान तथा विकास सेवा (डीआरडीएस) संवर्ग के कुल 20 अधिकारियों ने भाग लिया। पाठ्यक्रम के दौरान प्रौद्योगिकी प्रबंधन संस्थान (आईटीएम) के संकाय सदस्यों द्वारा ऑनलाइन माध्यम का प्रयोग करके व्याख्यान दिए गए।

पाठ्यक्रम का उद्घाटन श्री संजय टंडन, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, आईटीएम और डॉ मंजीत सिंह विशिष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, टीबीआरएल द्वारा

किया गया। इस कार्यशाला को आयोजित करने का उद्देश्य अधिकारियों में कार्यनीति के स्तर पर और साथ ही प्रचालन के स्तर पर भी सामने आने वाली नई प्रौद्योगिकीय चुनौतियों का सामना करने के लिए उनमें नेतृत्व क्षमता का संवर्धन करना और वरिष्ठ वैज्ञानिकों को प्रभावी एवं सफल नेतृत्व के लिए आवश्यक कौशल, आचरण एवं जानकारी को सीखने का अवसर प्रदान करना था।

इस पाठ्यक्रम के दौरान विभिन्न विषयों अर्थात समूह या विभिन्न समूहों के व्यवहार एवं उससे संबंधित मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया (समूह गतिकी) एवं टीम निर्माण से संबंधित संक्षिप्त विवरण, नेतृत्व कौशल एवं परिस्थिति के अनुरूप नेतृत्व कौशल निर्माण, विवाद प्रबंधन तथा विभिन्न प्रतिकूल परिस्थितियों को अनुकूल बनाने के लिए आवश्यक कौशल, नेतृत्व के लिए आवश्यक जन प्रबंधन कार्यनीति, टीम को अभिप्रेरित करना, निर्णय कौशल का विकास आदि विषयों पर संकाय सदस्यों द्वारा अत्यधिक सारगर्भित व्याख्यान दिए गए।

पाठ्यक्रम के अंत में श्री संजय टंडन, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, आईटीएम द्वारा समापन भाषण दिया गया और श्रीमती अनीता महिंद्रा ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया। डॉ मंजीत सिंह, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं



टीम भावना निर्माण और नेतृत्व विकास' विषय पर ऑनलाइन पाठ्यक्रम का आयोजन

निदेशक, टीबीआरएल ने इस पाठ्यक्रम को ऑनलाइन माध्यम से आयोजित

करने के लिए प्रौद्योगिकी प्रबंधन संस्थान (आईटीएम), मसूरी द्वारा किए गए प्रयासों की सराहना की।

परियोजना प्रबंधन सक्षमता विकास कार्यक्रम विषय पर पाठ्यक्रम का आयोजन

प्रौद्योगिकी प्रबंधन संस्थान (आईटीएम) और प्रोजेक्ट मैनेजमेंट एसोसिएट्स (पीएमए), इंडिया द्वारा 02 नवंबर 2020 से 06 नवंबर 2020 के दौरान परियोजना प्रबंधन सक्षमता विकास कार्यक्रम (आईपीएमए लेवल 'डी' सर्टिफिकेशन) विषय पर संयुक्त रूप से पांच दिवसीय ऑनलाइन पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया। इस पाठ्यक्रम में बाईस अधिकारियों (19 डीआरडीएस संवर्ग से, 02 डीआरटीसी संवर्ग से और 01 सैन्य अधिकारी) ने भाग लिया। प्रौद्योगिकी प्रबंधन संस्थान (आईटीएम) और प्रोजेक्ट मैनेजमेंट एसोसिएट्स (पीएमए), इंडिया से संकाय सदस्यों द्वारा इस पाठ्यक्रम में ऑनलाइन माध्यम से व्याख्यान दिए गए। कार्यक्रम का उद्घाटन ऑनलाइन माध्यम से 02 नवंबर 2020 को श्री संजय टंडन, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, आईटीएम द्वारा किया गया। श्री संजय टंडन, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, आईटीएम ने अपने

उद्घाटन भाषण में परियोजना प्रबंधन प्रमाणन कार्यक्रम के महत्व पर चर्चा की। प्रोजेक्ट मैनेजमेंट एसोसिएट्स (पीएमए), इंडिया के अध्यक्ष तथा ब्रह्मोस एयरोस्पेस के भूतपूर्व मुख्य कार्यपालक अधिकारी एवं

प्रबंधन निदेशक डॉ. ए शिवतनु पिल्लई, इस समारोह के मुख्य अतिथि थे। अपने संबोधन व्याख्यान में डॉ पिल्लई ने परियोजना प्रबंधन के क्षेत्र में अनुसंधान तथा विकास के संबंध में अपने व्यापक अनुभव को



परियोजना प्रबंधन सक्षमता विकास कार्यक्रम (आईपीएमए लेवल 'डी' सर्टिफिकेशन) विषय पर ऑनलाइन पाठ्यक्रम का आयोजन

कार्यक्रम में उपस्थित प्रतिभागियों के साथ साझा किया।

इस कार्यक्रम का उद्देश्य प्रतिभागियों में परियोजना प्रबंधन के क्षेत्र से संबंधित वैश्विक मानकों के अनुरूप विभिन्न विधियों और उपागमों के संबंध में व्यापक जागरूकता विकसित करना था। श्रीमती अनीता महिंद्रा, वैज्ञानिक 'एफ' एवं पाठ्यक्रम निदेशक ने इस पाठ्यक्रम को आयोजित करने के उद्देश्य के संबंध में तथा पाठ्यक्रम के संपूर्ण

पांच दिवसों के दौरान विचार-विमर्श किए जाने वाले सभी 29 सक्षमताओं के संबंध में एक विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया। इस पांच दिवसीय कार्यक्रम के दौरान संकाय सदस्यों द्वारा परियोजना, कार्यक्रम तथा पोर्टफोलियो ऑरियंटेशन, परियोजना अभिकल्प, आवश्यकता आदि विभिन्न विषयों को शामिल करते हुए व्याख्यान दिए गए। प्रोजेक्ट मैनेजमेंट एसोसिएट्स (पीएमए), इंडिया द्वारा 09 नवंबर 2020 को

आईपीएमए लेवल 'डी' सर्टिफिकेशन परीक्षा का ऑनलाइन आयोजन किया गया।

पाठ्यक्रम के अंत में श्री संजय टंडन, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, आईटीएम द्वारा समापन भाषण दिया गया। प्रोजेक्ट मैनेजमेंट एसोसिएट्स (पीएमए), इंडिया के क्षेत्रीय निदेशक (उत्तरी) श्री विशाल नारायण डार ने भी पाठ्यक्रम के प्रतिभागियों को संबोधित किया। श्रीमती महिंद्रा ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

अग्नि सुरक्षा विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

नौसेना भौतिक तथा समुद्र विज्ञान प्रयोगशाला (एनपीओएल), कोच्चि ने अपने कर्मचारियों की अग्नि सुरक्षा के संबंध में जागरूकता को बढ़ावा देने तथा उन्हें अग्निशामक उपकरणों को प्रयोग में लाए जाने के संबंध में अवगत कराने के लिए एक व्यावहारिक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। अग्निशामक उपकरणों को प्रयोग में लाए जाने के संबंध में व्यावहारिक प्रशिक्षण कार्यक्रम दुर्घटना होने की स्थिति में तेजी से बचाव के उपायों को करने के लिए और कोई अधिक क्षति न हो, इसे ध्यान में रखते हुए एक अनिवार्य प्रशिक्षण कार्यक्रम है। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का संचालन नौसेना भौतिक तथा समुद्र विज्ञान प्रयोगशाला (एनपीओएल) के सतर्कता, सुरक्षा और बचाव समूह (विजिलेंस, सिक्वोरिटी एंड सेफ्टी ग्रुप) द्वारा किया गया।

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन वैश्विक महामारी कोविड-19 के संदर्भ में जारी किए गए सामाजिक दूरी संबंधी



अग्निशामक उपकरणों के प्रयोग के संबंध में व्यावहारिक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

मानदंडों, सैनिटाइजेशन, मास्क पहने आदि विभिन्न दिशा निर्देशों का पालन करते हुए किया गया। संगठन में कर्मचारियों के बीच अग्नि सुरक्षा के संबंध में जागरूकता संवर्धन को ध्यान में रखते हुए अग्नि शमन का प्रत्यक्ष प्रदर्शन कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर अग्निशामक कर्मचारियों द्वारा प्रतिभागियों को विभिन्न श्रेणी की आग, विभिन्न श्रेणी के अग्निशामक

उपकरणों तथा अग्निशामक उपकरणों को प्रयोग में लाने की विधि आदि के संबंध में संक्षेप में बताया गया। इस दौरान अनेक प्रतिभागियों द्वारा अग्निशामक उपकरणों को व्यावहारिक रूप में भी प्रयोग में लाया गया। इस दौरान लगभग 150 कर्मचारियों को अग्निशामक उपकरणों को प्रयोग में लाए जाने के संबंध में प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

संगठन में नए शामिल हुए व्यक्तियों के लिए अभिमुखीकरण कार्यक्रम का आयोजन

नौसेना भौतिक तथा समुद्र विज्ञान प्रयोगशाला (एनपीओएल) में नए भर्ती हुए कर्मचारियों और साथ ही प्रयोगशाला में स्थानांतरण या प्रतिनियुक्ति आधार पर

नए शामिल हुए कर्मिकों के लिए 27-30 अक्टूबर 2020 के दौरान 'स्वागतम' नामक अभिमुखीकरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम को आयोजित करने

का उद्देश्य प्रयोगशाला में नव आगमन करने वाले कर्मिकों में प्रयोगशाला द्वारा चलाई जा रही विभिन्न महत्वपूर्ण परियोजनाओं, प्रयोगशाला की तकनीकी सक्षमता, यहां



पाठकों की राय

(आपकी राय हमारे लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे हमें इस पत्रिका को और अधिक परिमार्जित करने का अवसर प्राप्त होगा तथा ऐसा करके हम अपने संगठन की बेहतर सेवा कर पाएंगे)

1. स्थापना का नाम : _____
2. आप डीआरडीओ द्वारा किए जा रहे प्रौद्योगिकी तथा उत्पाद विकास को उपयुक्त रूप में प्रस्तुत करने के एक माध्यम के रूप में डीआरडीओ समाचार का निम्नलिखित किस रूप में मूल्यांकन करेंगे?
उत्कृष्ट बहुत अच्छा अच्छा उचित संतोषजनक
3. आप डीआरडीओ समाचार में शामिल की गई तकनीकी सामग्रियों का निम्नलिखित किस रूप में मूल्यांकन करेंगे?
उत्कृष्ट बहुत अच्छा अच्छा उचित संतोषजनक
4. आप डीआरडीओ समाचार में शामिल किए गए चित्रों की गुणवत्ता का निम्नलिखित किस रूप में मूल्यांकन करेंगे?
उत्कृष्ट बहुत अच्छा अच्छा उचित संतोषजनक
5. आप डीआरडीओ समाचार को उपयुक्त रूप में कितने पृष्ठों की पत्रिका के रूप में देखना चाहते हैं?
8 पृष्ठ 12 पृष्ठ 16 पृष्ठ 20 पृष्ठ
6. आप डीआरडीओ समाचार को किस माध्यम में पसंद करेंगे?
मुद्रित ई-प्रकाशन वीडियो पत्रिका
7. आपको डीआरडीओ समाचार की प्रति कब प्राप्त होती है?
 प्रकाशन के पूर्ववर्ती महीने में
 प्रकाशन के माह में
 प्रकाशन के अगले महीने
8. डीआरडीओ समाचार में निहित तकनीकी सामग्री में आगे और सुधार लाने के लिए आपके सुझाव :
.....
.....
.....

नाम : पदनाम :

संगठन का नाम :

दूरभाष : ई-मेल :

पता :





कृपया अपने सुझाव निम्नलिखित पते पर भेजें

संपादक, डीआरडीओ समाचार, डेसीडॉक, डीआरडीओ, मेटकॉफ हाउस, दिल्ली-110054

दूरभाष : 011-23902403, 23902482 फ़ैक्स : 011-23819151

ई-मेल : director@desidoc.drdo.in

डी आर डी ओ समाचार अपने प्रकाशन के बत्तीसवें वर्ष में है। यह प्रकाशन रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन (डी आर डी ओ) का मुख पत्र है। यह प्रकाशन डी आर डी ओ की वेब साइट पर पीडीएफ रूप में उपलब्ध है। इस प्रकाशन को अपने पते पर मंगवाने के लिए कृपया निदेशक, डेसीडॉक को लिखें।

उपलब्ध सुविधाओं और संगठनात्मक संस्कृति के संबंध में एक समग्र दृष्टिकोण सृजित करना था। इस कार्यक्रम में विभिन्न संवर्गों से संबंधित 22 प्रतिभागियों ने लिया। श्री एस विजयन पिल्लई, उत्कृष्ट वैज्ञानिक तथा निदेशक, एनपीओएल ने इस कार्यक्रम का उद्घाटन किया। इस कार्यक्रम के दौरान रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) एवं नौसेना भौतिक तथा समुद्र विज्ञान प्रयोगशाला (एनपीओएल) द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न कार्यक्रमों के संबंध में एक संक्षिप्त विवरण, प्रयोगशाला के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य, इस प्रयोगशाला में अपनाए जा रहे वर्तमान तथा भावी दोनों कार्य-जीवन दर्शन, आदि विषयों पर व्याख्यान आयोजित किए गए। प्रतिभागियों को आचरण नियमावली से जुड़े प्रशासनिक मामलों, अधिकार एवं विशेषाधिकार,



उद्घाटन भाषण देते हुए श्री एस विजयन पिल्लई, उत्कृष्ट वैज्ञानिक तथा निदेशक, एनपीओएल प्रयोगशाला स्तर पर निर्धारित की गई नीतियों के संबंध में अवगत कराने के लिए विशेष सत्र आयोजित किए गए और साथ ही प्रतिभागियों को प्रयोगशाला में सामग्री प्रबंधन प्रक्रिया के संबंध में भी एक आधारभूत जानकारी प्रदान की गई। प्रतिभागियों के लिए प्रयोगशाला में स्थापित की गई विभिन्न तकनीकी अवसंरचना सुविधाओं का एक निरीक्षण कार्यक्रम भी आयोजित किया गया।

डी एम आर एल, हैदराबाद में हिंदी पखवाड़े का आयोजन

रक्षा धातुकर्मीय अनुसंधान प्रयोगशाला (डीएमआरएल), हैदराबाद में 14-25 सितंबर 2020 के दौरान हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया। इस अवसर को अविस्मरणीय बनाने के लिए इस दौरान टिप्पण, प्रारूप लेखन, प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम, अंताक्षरी, टंकण, पाठन, निबंध लेखन, वाक् प्रतियोगिता, श्रुतलेख आदि विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। निबंध लेखन प्रतियोगिता 'रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता प्राप्त करने की आवश्यकता' विषय पर आयोजित की गई थी। 22 सितंबर 2020 को एक हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। डॉ. अशोक कुमार सिंह, वैज्ञानिक 'जी', डीएमआरएल इस अवसर पर आमंत्रित वक्ता के रूप में उपस्थित हुए थे। इस अवसर पर दिए गए अपने भाषण में आपने प्रतिभागियों को हिंदी

व्याकरण के विभिन्न आयामों के संबंध में विस्तार से बताया।

डॉ. ओम निधि शर्मा, उप महाप्रबंधक, मानव संसाधन (राजभाषा), भारत डायनामिक्स लिमिटेड (बीडीएल) इस पखवाड़े के समापन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुए थे। डॉ. शर्मा ने अपने संबोधन में रक्षा धातुकर्मीय

अनुसंधान प्रयोगशाला (डीएमआरएल) द्वारा किए जा रहे विभिन्न प्रयासों की सराहना की। इस कार्यक्रम का आयोजन वैश्विक महामारी कोविड-19 के प्रसार पर रोक लगाने के लिए भारत सरकार द्वारा जारी किए गए दिशा-निर्देशों को ध्यान में रखते हुए किया गया था।



रक्षा धातुकर्मीय अनुसंधान प्रयोगशाला (डीएमआरएल), हैदराबाद में हिंदी पखवाड़े का आयोजन

नियुक्तियां

निदेशक, कार्मिक प्रतिभा प्रबंधन केंद्र (सेपटेम)



डॉ. आलोक जैन, वैज्ञानिक 'जी' ने 01 अक्टूबर 2020 को कार्मिक प्रतिभा प्रबंधन केंद्र (सेपटेम) के निदेशक का पदभार ग्रहण किया। डॉ. आलोक जैन दिल्ली विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त करने के उपरांत वर्ष 1987 में टोस अवस्था भौतिक प्रयोगशाला एसएसपीएल दिल्ली में कार्यभार ग्रहण करके डीआरडीओ से जुड़े। इसके बाद आपने भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी), दिल्ली से भौतिकी में वाचस्पति (डॉ.ट इन फिजिक्स) की उपाधि प्राप्त की।

आपको टोसावस्था भौतिक प्रयोगशाला (एसएसपीएल) में विभिन्न परियोजनाओं पर कार्य करने का 30 वर्ष से भी अधिक का अनुभव प्राप्त है। टोसावस्था भौतिक प्रयोगशाला (एसएसपीएल) में आप ऑप्टोइलेक्ट्रॉनिक्स डिवीजन (प्रकाश-इलेक्ट्रॉनिकी प्रभाग) के प्रमुख थे जहां आपने विभिन्न उपकरणों जैसे कि गैलियम आर्सेनाइड (GaAs) गैलियम नाइट्राइड (GaN) आधारित लेजर डायोडों, रात्रि में अंधेरे में देखे जाने के लिए प्रयोग में लाए जाने वाले नाइट विजन उपकरणों के लिए तीसरी पीढ़ी के इमेज इंटेसिफायर ट्यूबों, सरंध सिलिकॉन, आदि जैसे विभिन्न उपकरणों को विकसित करने की दिशा में व्यापक कार्य किया है तथा आपने समूह III-V के तत्वों से निर्मित अर्धचालक उपकरणों के प्रक्रमण एवं संविरचन प्रक्रियाओं में विशेषज्ञता हासिल की है। इनके अतिरिक्त

आपने अवरक्त संसूचक (इंफ्रारेड डिटेक्टर-आईआर) तथा मानव संसाधन (एचआर) प्रभागों को भी अपना नेतृत्व प्रदान किया है।

आपको लेजर डायोडों के पार्श्व लेपन (फ़ैसेट कोटिंग) और इन्हें निष्क्रिय बनाने से संबंधित पैसिवेशन प्रोसेस को विकसित करने के लिए वर्ष 2006 में डीआरडीओ प्रौद्योगिकी पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। आपको टोसावस्था भौतिक प्रयोगशाला में उच्च शक्ति के लेजर डायोड से संबंधित क्रियाकलापों को अपना नेतृत्व प्रदान करने लिए वर्ष 2018 में वर्ष के वैज्ञानिक पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया है। आपको विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं, सम्मेलनों एवं कार्यशालाओं में अपने लेखों को प्रकाशित करने का श्रेय प्राप्त है।

कार्मिक प्रतिभा प्रबंधन केंद्र के (सेपटेम) में आपने पहली बार वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए रक्षा अनुसंधान तकनीकी संवर्ग (डीआरटीसी) की मूल्यांकन प्रक्रिया का नेतृत्व किया है।

निदेशक, यंत्र अनुसंधान तथा विकास स्थापना (आईआर डी ई), देहरादून



डॉ. विनय कुमार दास, उत्कृष्ट वैज्ञानिक ने 28 अगस्त 2020 को यंत्र अनुसंधान तथा विकास स्थापना (आईआरडीई), देहरादून में निदेशक का पदभार ग्रहण किया। यंत्र अनुसंधान तथा विकास स्थापना (आईआरडीई) में निदेशक का पदभार ग्रहण करने से पूर्व डॉ दास नवंबर 2015 से एकीकृत परीक्षण परिसर (आईटीआर), चांदीपुर में निदेशक के पद पर तैनात थे।

डॉ. दास एकीकृत परीक्षण परिसर (आईटीआर) से अपने कैरियर की शुरुआत कर वर्ष 1987 में रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन (डीआरडीओ) से जुड़े और मिसाइलों, रॉकेटों एवं अन्य वायु वाहित आयुध प्रणालियों के कार्य - निष्पादन मूल्यांकन से संबंधित कार्यों में शामिल रहे। आप एकीकृत परीक्षण परिसर (आईटीआर) की सभी योजनाओं में शामिल रहे हैं और आपने आईटीआर से आयोजित किए गए सभी मिशनों में अपना सहयोग प्रदान किया है। इस अवधि के दौरान आपने परीक्षण परिसर के आधुनिकीकरण का कार्य कर रही टीम को अपना नेतृत्व प्रदान किया है। अपने आईटीआर की टीम के साथ मिलकर वास्तविक काल स्वचालित वीडियो ट्रैकर (रियल टाइम ऑटोमेटिक वीडियो ट्रैकर), पोस्ट प्रोसेसिंग सिस्टम, वीडियो एनकोडर, वैद्युत प्रकाशीय ट्रैकिंग प्रणाली (ईओटीएस), ड्रोन आधारित टेलिमेटरी प्रणाली, रडार प्रणालियों की ट्रैकिंग, दूर नियंत्रण प्रणाली (टेली कमांड सिस्टम) तथा सभी अन्य परिसर प्रणालियों को अभिकल्पित एवं विकसित करके परिसर से संबंधित अनेक महत्वपूर्ण प्रणालियों को सफलतापूर्वक तैयार किया है। आपने एकीकृत परीक्षण परिसर (आईटीआर) में उच्च कार्य-निष्पादन वाले सेंसरों और प्रतिबिंब प्रक्रमण (इमेज प्रोसेसिंग) में संवर्धन द्वारा वैद्युत प्रकाशीय ट्रैकिंग प्रणाली (ईओटीएस) के ट्रैकिंग रेंज का संवर्धन किया है। वैद्युत प्रकाशीय ट्रैकिंग प्रणाली (ईओटीएस) को विकसित किए जाने और इसे परिसर में प्रयोग में लाए जाने से कलिंग मिशन को निष्पादित किए जाने के दौरान अत्यधिक उत्कृष्ट परिणाम प्राप्त हुए हैं। अपने बी 05 और के-4 मिशनों को सहायता उपलब्ध कराने के लिए कलिंग रेंज को सर्वाधिक कम समय के भीतर विकसित करने का कार्य कर रही टीम को अपना नेतृत्व प्रदान किया है। आपने द्वीप परिसर और मैदानी



परिसर को स्थापित करने तथा इन्हें यंत्रों से सुसज्जित करने में अत्यधिक महत्वपूर्ण योगदान किया है। इस परिसर से अनेक मिसाइलों का सफलतापूर्वक परीक्षण किया गया है। लक्ष्य तथा अंतरावरोधक (इंटरसेप्टर) प्रक्षेपण के दौरान चांदीपुर और धामड़ा परिसरों से प्राप्त हुई समवर्ती सहायता आपके परिसर प्रबंधन कौशल को प्रतिबिंबित करती है। आपने परिसर प्रणालियों से संबंधित अनेक महत्वपूर्ण प्रणालियों को विकसित किया है और इस प्रकार इस प्रक्षेपण परिसर की क्षमता में वृद्धि हुई है। आपने नीलगिरी पर्वत की चोटी पर ट्रैकिंग सुविधाओं तथा पोर्ट ब्लेयर में मध्यम दूरी की ट्रैकिंग सुविधाओं को स्थापित करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान किया है। वर्तमान समय में अत्याधुनिक प्रणालियों एवं सुविधाओं से लैस एकीकृत परीक्षण परिसर (आईटीआर) एक संपूर्ण स्वदेशी परीक्षण परिसर उपलब्ध कराने में सक्षम है।

डॉ. दास ने बिरला इंजिनियरिंग कॉलेज ओडिशा से इलेक्ट्रॉनिक्स में प्रौद्योगिकी स्नातक (बीटेक) की उपाधि प्राप्त की। इसके पश्चात आपने भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी), खड़गपुर से कंप्यूटर विज्ञान विषय में प्रौद्योगिकी में स्नातकोत्तर (एमटेक) की उपाधि और प्रतिबिंब प्रक्रमण (इमेज प्रोसेसिंग) विषय में वाचस्पति अनुसंधान क्रियाकलापों को पूरा करके पीएचडी की उपाधि प्राप्त की। आपको बीटेक करते हुए बेस्ट ग्रेजुएट गोल्ड मेडल प्रदान किया गया और प्रौद्योगिकी में स्नातकोत्तर (एमटेक) की परीक्षा में आप आईआईटी, खड़गपुर के टॉपर रहे। आपके द्वारा लिखे गए शोध प्रबंध को संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा सर्वोत्तम शोध प्रबंध होने का पुरस्कार प्रदान किया गया है। आपको अनेक राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित होने का श्रेय प्राप्त है जिनमें से कुछ पुरस्कारों के नाम नीचे दिए गए हैं।

- विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में देश को युवा नेतृत्व प्रदान करने के लिए लक्ष्मीपति सिंघानिया – आईआईएम लखनऊ द्वारा दिया गया वर्ष 2008 का राष्ट्रीय नेतृत्व पुरस्कार (देश के लिए दिया जाने वाला केवल एक पुरस्कार)
- प्रतिबिंब प्रक्रमण और वैद्युत प्रकाशिकी के क्षेत्र में प्रौद्योगिकीय विकास के लिए राष्ट्रीय अनुसंधान तथा विकास निगम (एनआरडीसी) द्वारा दिया गया वर्ष 1997-98 का राष्ट्रीय पुरस्कार (डीआरडीओ की सभी प्रयोगशालाओं और इसरो के सभी केंद्रों में से एकमात्र प्राप्तकर्ता)
- वैद्युत प्रकाशिकी और प्रतिबिंब प्रक्रमण के क्षेत्र में योगदान के लिए भारतीय राष्ट्रीय अभियांत्रिकी अकादमी (आईएनईई) द्वारा वर्ष 1999 का युवा अभियांत्रिकी राष्ट्रीय पुरस्कार तथा पदक (राष्ट्रीय टॉपर)
- समानांतर तथा संवितरित संगणन एवं प्रणाली विषय पर इंटरनेशनल एसोसिएशन ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी फॉर डेवलपमेंट (आईएएसटीईडी) द्वारा आयोजित किए गए 16वें अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में 30 देशों से आए 300 प्रस्तुतकर्ताओं में से सर्वाधिक उत्तम लेख प्रस्तुतीकरण के लिए मैसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (एमआईटी), कैंब्रिज, मैसाचुसेट्स, संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा दिया गया सर्वोत्तम प्रस्तुतीकरण पुरस्कार, नवंबर, 2004
- परिवर्तनकारी नेतृत्व कौशल परीक्षण तथा मूल्यांकन विषय पर संयुक्त राज्य अमेरिका (यूएसए) में सितंबर 2005 के दौरान इंटरनेशनल टेस्ट एंड इवैल्यूएशन एसोसिएशन (आईटीईए) द्वारा आयोजित किए गए 25वें वार्षिक अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठि में सभी

प्रस्तुतकर्ताओं में से सर्वाधिक उत्तम लेख प्रस्तुतीकरण के लिए दिया गया सर्वोत्तम प्रस्तुतीकरण पुरस्कार (एशिया से एक मात्र पुरस्कार प्राप्त कर्ता)

- सितंबर 2007 में सिडनी, ऑस्ट्रेलिया में एसईटीई-2007 में सर्वाधिक उत्तम लेख प्रस्तुतीकरण के लिए दिया गया सर्वोत्तम प्रस्तुतीकरण पुरस्कार
- अभियांत्रिकी क्षेत्र में सहस्राब्दी के युवा नेता के रूप में विश्व के कौन हैं कौन (हू इज हू ऑफ द वर्ल्ड) सूची में शामिल किए जाने के लिए चयन किया गया और उस सूची में इनका नाम डाला गया
- प्रतिबिंब प्रक्रमण के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए ओडिशा विज्ञान अकादमी द्वारा युवा वैज्ञानिक पुरस्कार से सम्मानित किया गया (राज्य भर से चयनित प्रतिभाशाली व्यक्तियों में से केवल एक को दिया जाने वाला पुरस्कार)
- उत्कल दिवस कमिटी द्वारा ओडिशा के सर्वोत्तम वैज्ञानिक के रूप में न्यूटन पुरस्कार से सम्मानित
- राज्य की सर्वोत्तम उभरती हुई प्रतिभा के रूप में प्रतिभा श्री पुरस्कार से सम्मानित
- वैद्युत प्रकाशिकी के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए डीआरडीओ द्वारा वर्ष 2003 के डीआरडीओ वैज्ञानिक पुरस्कार से सम्मानित
- वायु सुरक्षा प्रणाली टीम (टीम एयर डिफेंस सिस्टम्स) के एक सदस्य के रूप में वर्ष 2006 के पथ प्रवर्तक अनुसंधान पुरस्कार से सम्मानित
- के-15 प्रोग्राम की टीम (टीम फॉर के-15 प्रोग्राम) के एक सदस्य के रूप में वर्ष 2007-08 के पथ प्रवर्तक अनुसंधान पुरस्कार से सम्मानित
- राष्ट्रीय विज्ञान दिवस 1996 में सर्वाधिक उत्तम लेख प्रस्तुतीकरण के

लिए दिया गया सर्वोत्तम प्रस्तुतीकरण पुरस्कार

- सर्वोत्तम प्रणाली प्रयोगशाला-2016 (बेस्ट सिस्टम्स लैब- 2016) के लिए सिलिकॉन ट्रॉफी से सम्मानित

आपको विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं एवं सम्मेलनों में 200 से भी अधिक लेखों को प्रकाशित करने का श्रेय प्राप्त है। आपको विश्व के लगभग सभी अग्रणी देशों में अपने अनुसंधान विषयक व्याख्यान देने का भी श्रेय प्राप्त है।

पुरस्कार

आईआईएम की अध्येतावृत्ति

रक्षा धातुकर्मीय अनुसंधान प्रयोगशाला (डीएमआरएल), हैदराबाद के



डॉ. अमित भट्टाचार्य, वैज्ञानिक 'जी' का 01 अगस्त 2020 से भारतीय धातु संस्थान (आईआईएम) के अध्येता के रूप में चयन किया गया है।

उच्च योग्यता अर्जन



उन्नत प्रणाली प्रयोगशाला (एएसएल) के श्री बसंत कुमार, वैज्ञानिक 'ई' को उनके द्वारा 'नेचुरल नेबर गैलरकिन मेथड का प्रयोग करके प्रकार्यात्मक रूप से श्रेणीकृत

प्लेटों का नॉन लोकल नॉन लीनियर विश्लेषण' विषय पर लिखे गए शोध प्रबंध के लिए भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआई टी), हैदराबाद द्वारा पीएचडी की उपाधि प्रदान की गई है।



नौसेना भौतिक तथा समुद्र विज्ञान प्रयोगशाला (एनपीओएल), कोच्चि के श्री आनंद पी, वैज्ञानिक 'ई' को उनके द्वारा भौतिक समुद्र विज्ञान के क्षेत्र में 'पूर्वी अरब सागर के ऊपरी सागर तल में निरंतर परिवर्तित हो रही परिस्थितियां: प्रेक्षण तथा प्रतिरूपण पर आधारित अध्ययन' विषय पर लिखे गए शोध प्रबंध के लिए कोचीन विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय द्वारा पीएचडी की उपाधि प्रदान की गई है।

निरीक्षण / दौरा कार्यक्रम

डी आर डी ओ की प्रयोगशालाओं/स्थापनाओं में पधारे अतिथिगण



हिम तथा अवघाव अध्ययन स्थापना (सासे) में सेंसर कैलिब्रेशन लैबोरेट्री का उद्घाटन करते हुए माननीय रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह



रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह ने रोहतांग दर्रे के नीचे बनाई जा रही अटल सुरंग के कार्य में हुई प्रगति की समीक्षा करने के लिए किए गए अपने निरीक्षण के दौरान 2 अक्टूबर 2020 को हिम तथा अवधाव अध्ययन स्थापना (सासे), मनाली का भी निरीक्षण किया। इस अवसर पर महानिदेशक (एसीई), डीआरडीओ श्री पी के मेहता ने माननीय रक्षा मंत्री का हिम तथा अवधाव अध्ययन स्थापना

(सासे) प्रयोगशाला में स्वागत किया। इस अवसर पर हिम तथा अवधाव अध्ययन स्थापना (सासे) के निदेशक डॉ एल के सिन्हा और पूर्व निदेशक, श्री नरेश कुमार ने रक्षा मंत्री को हिम तथा अवधाव अध्ययन स्थापना (सासे) द्वारा किए जा रहे विभिन्न क्रियाकलापों तथा हिमालय के बर्फ से ढके क्षेत्रों में प्रायः आने वाले हिम अवधाव के कारण उत्पन्न होने वाले खतरों को कम करने में हिम तथा अवधाव अध्ययन स्थापना

(सासे) की भूमिका के बारे में संक्षेप में बताया।

अपने इस दौरे के दौरान माननीय रक्षा मंत्री ने अत्याधुनिक सेंसर अंशांकन प्रयोगशाला 'सेंसर कैलिब्रेशन लैबोरेट्री' की नींव रखी और भूमि पूजन किया। इस परियोजना में सेंसर कैलिब्रेशन लैबोरेट्री का निर्माण और विभिन्न अंशांकन उपकरणों और तापमान नियंत्रित पवन सुरंग को संस्थापित किया जाना शामिल है।

स्वीकृत पेटेंट

रक्षा धातुकर्मीय अनुसंधान प्रयोगशाला (डीएमआरएल), हैदराबाद को 'लो लोड लो फ्रीक्वेंसी पाईजोइलेक्ट्रिक पावर जनरेटर' के लिए पेटेंट स्वीकृत किया गया है (पेटेंट संख्या 341323)। इसके आविष्कारकर्ता के रूप में डॉ. ए आर जेम्स, वैज्ञानिक 'एफ' का नाम शामिल किया गया है।



www.drdo.gov.in/drdo/English/index.jsp?pg=samachar.jsp

